विश्व सद्भाव की ओर

संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों के संबंध में जानकारी देने के लिए कुछ सुझाव

राजकमल प्रकाशन

दिल्ली-6 पटना-6

© यूनेस्को, 1949

Hindi Translation of 'Some Suggestions on Teaching about The U. N. and its Specialised Agencies' prepared by Unesco.

यूनेस्को के भारतीय राष्ट्रीय आयोग (शिक्षा मंत्रालय)
के लिए केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय
(शिक्षा मंत्रालय) की प्रकाशकों के सहयोग से कार्यान्वित
अनुवाद-प्रकाशन योजना के अंतर्गत प्रकाशित

हिन्दी संस्करण : 1968

●

मूल्य : 1.20

अनुवाद : के. एन. मिश्र

पुनरीक्षण : ए. पी. मिश्र

●

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड
8, फ़ैज़ बाज़ार, दिल्ली-6

●

मुद्रक : नवीन प्रेस
नेताजी सुभाष मार्ग, दिल्ली-6

73
Acc. No. 35633
Date 3.2.71
SIMLA
PH
23/12/81
060
Un28 V
Library IIAS, Shimla
PH
00035633

यह पुस्तिका संयुक्त राष्ट्र संघीय शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संगठन (यूनेस्को) द्वारा अपने उस कार्यक्रम के अंग रूप में तैयार की गयी है जिसका उद्देश्य सदस्य देशों के स्कूलों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव संबंधी शिक्षा को बढ़ावा देना और उसमें सहायता देना है। जुलाई 1948 में यूनेस्को और अन्तर्राष्ट्रीय शिक्षा कार्यालय ने मिलकर, सार्वजनिक शिक्षा के बारे में जो ग्यारहवां अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाया था उसके सामने इसका पहला मसौदा कार्य-संचालन निबन्ध के रूप में रखा गया था। बाद में जुलाई और अगस्त 1949 में न्यूयार्क के अडेल्फी कालेज में संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों संबंधी शिक्षा के बारे में संयुक्त राष्ट्र संघ के सहयोग से यूनेस्को की जो गोष्ठी बुलाई गयी थी उसमें इस पर विस्तार से विचार किया गया। जो विचार उस समय प्रकट किये गये उनको ध्यान में रख कर इस मसौदे में संशोधन कर दिया गया और अब इसे दोबारा प्रकाशित करके बड़े पैमाने पर वितरित किया जा रहा है। आशा है कि इससे बहुत से देशों के अध्यापकों को सहायता मिलेगी।

दो शब्द

हिन्दी के विकास और प्रसार के लिए शिक्षा-मंत्रालय के तत्वावधान में पुस्तकों के प्रकाशन की विभिन्न योजनाएँ कार्यान्वित की जा रही हैं। हिन्दी में अभी तक ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में पर्याप्त साहित्य उपलब्ध नहीं है, इसलिए ऐसे साहित्य के प्रकाशन को विशेष प्रोत्साहन दिया जा रहा है। यह तो आवश्यक ही है कि ऐसी पुस्तकें उच्च कोटि की हों, किन्तु यह भी ज़रूरी है कि वे अधिक मँहगी न हों ताकि सामान्य हिन्दी पाठक उन्हें खरीदकर पढ़ सकें। इन उद्देश्यों को सामने रखते हुए जो योजनाएँ बनाई गई हैं, उनमें से एक योजना प्रकाशकों के सहयोग से पुस्तकें प्रकाशित करने की है। इस योजना के अधीन भारत सरकार प्रकाशित पुस्तकों की प्रतियाँ निश्चित संख्या में खरीदकर प्रकाशकों को मदद पहुँचाती है।

प्रस्तुत पुस्तक यूनेस्को-प्रकाशनों के हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने की शृंखला में इसी योजना के अन्तर्गत प्रकाशित की जा रही है। इसके अनुवाद और पुनरीक्षण की व्यवस्था यूनेस्को के भारतीय राष्ट्रीय आयोग ने की है और प्रकाशन तथा कापीराइट इत्यादि की व्यवस्था प्रकाशक ने स्वयं की है। इसमें शिक्षा-मंत्रालय द्वारा स्वीकृत शब्दावली का उपयोग किया गया है।

हमें विश्वास है कि शासन और प्रकाशकों के सहयोग से प्रकाशित साहित्य हिन्दी को समृद्ध बनाने में सहायक होगा और इस व्यवस्था के फलस्वरूप ज्ञान-विज्ञान से सम्बन्धित अधिकाधिक पुस्तकें हिन्दी के पाठकों को उपलब्ध हो सकेंगी।

ए. चंद्रहासन

निदेशक

केन्द्रीय हिन्दी निदेशालय

भूमिका

I

अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव संबंधी शिक्षा की परिभाषा कई प्रकार से की जा सकती है, और विभिन्न देशों में इसकी अलग-अलग व्याख्या की गयी है। परन्तु सामान्य उद्देश्य स्पष्ट है और उसे प्राप्त करने के लिए यूनेस्को ने (दस्तावेज 2सी 166) दो मुख्य मार्ग सुझाये हैं।

1. अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के लिए छात्रों में अनुकूल मनोवृत्ति का विकास करना, जिससे वे संसार की उन बातों के प्रति जागरूक हों जो संसार के लोगों को आपस में मिलाती हैं और साथ ही वे उन दायित्वों को भी स्वीकार कर सकें जो परस्परावलम्बी संसार की ओर से उन पर आते हैं।

2. इन बातों की जानकारी देना : अन्य देश और उनके निवासी; विश्व संस्कृति में सभी जातियों, धर्मों और राष्ट्रों का योगदान; अन्तर्राष्ट्रीय झगड़ों और उनके कारणों का इतिहास—इन्हें इस रूप में प्रस्तुत किया जाय जिससे कि आधुनिक संसार के परस्परावलम्बन, अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के विकास और विश्व-समाज की आवश्यकता पर जोर दिया जा सके; वर्तमान घटनाएं; संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरण।

इस पुस्तिका में जो सुझाव दिये गये हैं उनसे पता चलेगा कि दोनों मार्ग एक-दूसरे के पूरक हैं। छात्रों के लिए जरूरी है कि वे जानकारी प्राप्त करें परन्तु उससे भी ज्यादा जरूरी यह है कि इस जानकारी से अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के लिए अनुकूल मनोवृत्ति का विकास किया जा सके।

1947 में मेक्सिको में हुई यूनेस्को की साधारण सभा के निर्णय के अनुसार इस पुस्तिका का संबंध केवल स्कूलों में संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों के बारे में शिक्षा देने से है। आशा की जाती है कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के विकास के इन दो उपायों के अन्य पहलुओं पर यूनेस्को भविष्य में अपने सुझाव देगा।

II

जो सुझाव यहां दिये गये हैं उनमें से कुछ सुझाव सभी देशों पर लागू नहीं होंगे। जिन स्कूलों के पास शिक्षा-संबंधी साज-सामान तथा दृश्य साधन पर्याप्त मात्रा में हैं और जो फिल्म तथा रेडियो जैसे आधुनिक संचार-साधनों का उपयोग कर सकते हैं, उनके लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के बारे में जानकारी देना तथा अपने छात्रों के मन में इसके प्रयोजनों के बारे में और उनके जीवन पर इसके निहित प्रभाव के प्रति दिलचस्पी पैदा करना अपेक्षाकृत सरल होगा। परन्तु अधिकांश देशों की स्थिति इतनी अच्छी नहीं है और उनका काम कहीं अधिक कठिन है। देहाती क्षेत्रों में या औद्योगिक दृष्टि से अविकसित देशों में आम तौर पर नियमित शिक्षा का एकमात्र साधन स्कूल ही है और स्कूल का पाठ्यक्रम प्रशिक्षित अध्यापकों और सामग्री के अभाव के कारण प्राय: अपरिवर्तनशील होता है और स्कूल के बाहर की दुनिया में जो घटनाएं घटती हैं उनका प्रभाव पाठ्यक्रम पर शायद ही कभी पड़ता हो। आशा है कि इस पुस्तिका में दिये गये कुछ सुझाव उन अध्यापकों के लिए भी उपयोगी होंगे जिन्हें बहुत ही कठिन परिस्थितियों काम करना पड़ता है तथा उन अध्यापकों के लिए भी जिनकी परिस्थितियां अपेक्षाकृत कहीं अधिक अच्छी हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों के सम्बन्ध में जानकारी का सुझाव

संयुक्त राष्ट्र संघ की व्यवस्था के सम्बन्ध में जानकारी कराने का महत्त्व

आजकल शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह होना चाहिए कि इस तरह के लड़के और लड़कियाँ तैयार की जाएँ, जो ऐसे विश्व-समाज की स्थापना में सक्रिय भाग ले सकें जिसमें शांति, सुरक्षा तथा प्रत्येक व्यक्ति के लिए अधिक सम्पूर्ण जीवन की व्यवस्था हो।

इस काम के लिए एक बहुत जरूरी बात यह है कि विद्यार्थियों को संयुक्त राष्ट्र संघ तथा उसके विशेष अभिकरणों के बारे में पूरी-पूरी जानकारी हासिल करनी चाहिए, क्योंकि यह विश्व-समाज की स्थापना की दिशा में अन्तर्राष्ट्रीय तथा सरकारी स्तर पर एक महान सामयिक प्रयत्न है। उन्हें यह समझाना चाहिए कि इस प्रयत्न का क्या महत्त्व है तथा उनके जीवन पर इसका क्या प्रभाव पड़ सकता है।

इसके अलावा, स्कूलों में जो कुछ सिखाया जाता है उससे जागरूक जनमत के निर्माण में तथा आम लोगों का समर्थन प्राप्त करने में मदद मिल सकती है। इसके बिना संयुक्त राष्ट्र संघ सफल नहीं हो सकता।

सामान्य उपाय

छात्रों की उम्र, योग्यता और रुचि के अनुसार तथा देश-विशेष की शिक्षा-सम्बन्धी विशिष्ट परिस्थितियों के अनुसार संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष

अभिकरणों के बारे में दी जाने वाली शिक्षा की विषयवस्तु और प्रणाली अलग-अलग होती है। फिर भी सभी राष्ट्रों के लिए कुछ सामान्य बातें ध्यान में रखनी चाहिएँ जिनमें से कुछ नीचे दी गयी हैं :

1. संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों के बारे में सभी तथ्य दिये जाने चाहिए परन्तु सबसे ज़्यादा ज़रूरी बात यह है कि उनके सिद्धान्त तथा प्रयोजन स्पष्ट रूप से बताये जाएँ। इनका स्पष्टीकरण अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों की पृष्ठभूमि, रचना, कार्यकलापों और समस्याओं की जानकारी देकर किया जाना चाहिए।

2. संयुक्त राष्ट्र संघ के निर्माण को उन दीर्घकालीन मानव प्रयासों में एक महत्वपूर्ण कदम के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए जिनका उद्देश्य बढ़ते हुए जनसमूह में व्यक्तियों का कल्याण करना है।

3. जहाँ तक सम्भव हो, शिक्षा से यह पता चलना चाहिए कि संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके अभिकरण बच्चों, नौजवानों अथवा वयस्कों के जीवन पर किस तरह प्रभाव डालते हैं या डाल सकते हैं। इस सम्बन्ध में विशेष अभिकरणों के काम पर ज़ोर देना चाहिए।

4. संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों को ऐसी समन्वित व्यवस्था के रूप में प्रस्तुत करना चाहिए जिसका प्रत्येक अंग आने वाली पीढ़ियों को युद्ध के संकट से बचाने, आधारभूत मानव अधिकारों में पुन: विश्वास प्रकट करने और अधिक स्वतंत्रतापूर्ण वातावरण में सामाजिक उन्नति करने तथा जीवन-स्तर को ऊँचा उठाने के सामूहिक प्रयास के किसी एक या एक से अधिक उद्देश्यों के लिए काम कर रहा है।

5. शिक्षा, जहाँ तक सम्भव हो, सोद्देश्य तथा यथार्थवादी होनी चाहिए। इसके द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग की सफलताओं पर ज़ोर दिया जाना चाहिए, पर अन्तर्राष्ट्रीय सहयोग के मार्ग में जो बाधाएँ हैं, उनकी उपेक्षा नहीं की जानी चाहिए।

6. इसे इस बात पर ज़ोर देना चाहिए कि संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों की सफलता इस बात पर निर्भर है कि लोगों को इनका उपयोग करने की कितनी इच्छा है।

7. इसे समाज, राष्ट्र और संसार के लोगों द्वारा बुद्धिमत्ता से काम किये जाने की आवश्यकता पर बल देना चाहिए और विद्यार्थियों को बताना चाहिए कि जब वे स्कूलों में शिक्षा पा रहे हों तब इस दिशा में क्या कर सकते हैं।

विभिन्न आयु-वर्ग के छात्रों के नियमित पाठ्यक्रम की पद्धतियाँ और दृष्टिकोण

सम्भवतः संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों के बारे में अधिकांश शिक्षा ऐसे लड़के और लड़कियों को ही दी जाएगी जो किशोरावस्था में हों क्योंकि उस समय वे इसके पूरे महत्व को अधिक सरलता से समझ सकेंगे। फिर भी, विभिन्न आयु वर्गों के लिए, जिनमें छोटे बच्चे भी शामिल होंगे, कुछ प्रभावपूर्ण शिक्षा का प्रबन्ध करना पड़ेगा। यह सुझाव दिया जाता है कि स्कूली शिक्षा की कई वर्ष की अवधि में संयुक्त राष्ट्र संघ की व्यवस्था के कुछ पहलुओं की जानकारी देने की ओर उचित ध्यान दिया जाए, ताकि बच्चा इस विषय की कुल और लगातार शिक्षा से लाभ उठा सके।

यदि अन्तर्राष्ट्रीय सरकार को सफल होना है तो हर जगह शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य यह होना चाहिए कि नागरिकों के उन गुणों का विकास किया जाए जो ऐसी नींव का काम दे सकें जिस पर अन्तर्राष्ट्रीय सरकार का भवन खड़ा किया जा सके। आम तौर पर स्कूलों में बहुत छोटे बच्चों के सम्बन्ध में इस बात पर बल दिया जाता है कि उनमें सहयोग, मित्रता और ईमानदारी का दृष्टिकोण पैदा हो और ज़िम्मेदारी की भावना का विकास हो। अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव के लिए यही बुनियादी शिक्षा है और इस अवस्था में राष्ट्र संघ और उनके विशेष अभिकरणों की शिक्षा देने का सबसे सुगम मार्ग शायद यही हो सकता है।

लेकिन सात, आठ या नौ साल तक के बच्चों को राष्ट्र संघ के बारे में कुछ बातें प्रत्यक्ष रूप से भी बतायी जा सकती हैं। संयुक्त राष्ट्र संघ में मिलजुलकर काम करने वाले विभिन्न देशों के बारे में ज्ञान प्राप्त करके वे इस दिशा में कुछ शुरुआत कर सकते हैं। वे इन देशों के बच्चों के बारे में, उनके गीतों, नृत्यों, खेलकूद, कहानियों और रहन-सहन के तरीकों के सम्बन्ध में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। स्पष्टतः यह काम बहुत सरल है, यदि पर्याप्त उदाहरण, चित्र, नाटक और कहानियाँ मिल सकें। परन्तु इसके बिना भी एक उद्यमी शिक्षक अपने विद्यार्थियों के मन में दूसरे देशों के प्रति रुचि पैदा कर सकता है। बच्चे यह बात भली प्रकार समझ सकते हैं कि विभिन्न राष्ट्रों के लोग अपनी समस्याओं पर विचार करने और उनका शांतिपूर्ण ढंग से हल निकालने के लिए एकत्र होते हैं। समझदार शिक्षक अपने विद्यार्थियों को जाने-बूझे विषयों की बजाय अज्ञात विषयों की ओर ले जाएगा और उदाहरणार्थ यह बता सकता है कि एक स्थानीय डाकघर विश्व डाक संघ से किस प्रकार प्रभावित होता है। विशेष दिवसों पर संयुक्त राष्ट्र संघ प्रणाली की सरल

शिक्षा देने का अवसर मिल सकता है। उदाहरणार्थ २४ अक्टूबर को ही लीजिए। यह संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणापत्र के लागू होने का दिवस है और इसे संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस कहा जाता है। यह दिन विद्यार्थियों को संयुक्त राष्ट्र संघ की याद दिलाने का एक अच्छा अवसर है।

छोटे बच्चों से संयुक्त राष्ट्र संघ और उस विशेष अभिकरणों की चर्चा अधिकांशत: प्रसंगवश ही की जा सकती है परन्तु दस, ग्यारह और बारह साल के बच्चों के लिए तो किसी प्रकार की नियमित शिक्षा का प्रबन्ध किया जा सकता है और अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के मूल में जो विचार हैं उन्हें सरल तरीके से और नक्शों द्वारा समझाया जा सकता है। अन्तर्राष्ट्रीय न्यायालय तथा स्थानीय न्यायालय में क्या-क्या समानताएं हैं यह बताया जा सकता है। स्थानीय कारखाने की स्थिति का अध्ययन कराया जा सकता है क्योंकि हो सकता है कि उस कारखाने पर अन्तर्राष्ट्रीय श्रम कार्यालय का कुछ प्रभाव पड़ा हो और नगर के स्वास्थ्य-केन्द्र की तुलना विश्व स्वास्थ्य संगठन के उद्देश्यों से की जा सकती है। नगरपालिका का सम्बन्ध राष्ट्र संघ की महासभा से जोड़ा जा सकता है इत्यादि। ज्यों-ज्यों बच्चे बड़े होते जाएँ उन्हें संयुक्त राष्ट्र संघ की अधिक व्यापक और जटिल कल्पना से परिचित कराया जा सकता है।

संयुक्त राष्ट्र संघ किस प्रकार आरम्भ हुआ, किस प्रकार काम करता है और कौन-कौन से काम करना चाहता है, इन बातों की जानकारी दिलाते हुए बच्चों में नये मार्ग खोजने और भविष्य का निर्माण करने के कार्यों के प्रति दिलचस्पी पैदा करनी चाहिये। शिक्षक को विद्यार्थियों में संघ-भावना अर्थात् संयुक्त राष्ट्र संघ के प्रति आत्मीयता का भाव और विश्व-समाज के निर्माण का कार्य आरम्भ करने की भावना का विकास करने की भी चेष्टा करनी चाहिये। वे यह बात समझ सकते हैं कि हर सदस्य राज्य संयुक्त राष्ट्र संघ के लिए अपना योगदान देता है और प्रत्येक व्यक्ति पर प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से इसका प्रभाव पड़ता है। वे अपने देश के प्रतिनिधियों के बारे में कुछ जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। हो सकता है कि उनके मन में संयुक्त राष्ट्र से सम्बन्धित प्रमुख व्यक्तियों के प्रति रुचि पैदा हो जाय और यदि उनकी संक्षिप्त जीवनियाँ उन्हें मिल सकें तो वे और अधिक स्पष्ट रूप से जान सकेंगे।

जब लड़के और लड़कियाँ पन्द्रह, सोलह और सत्रह वर्ष के हो जाएँ तो वे संयुक्त राष्ट्र संघ के ढाँचे और कार्यवाहियों का अपेक्षाकृत अधिक व्यापक अध्ययन कर सकते हैं। बहुत से देशों में, लिखित संविधान और संयुक्त राष्ट्र संघ के घोषणा-पत्र की तुलना की जा सकती है। देश के नागरिक और विश्व के नागरिक के कार्यों की तुलना और चर्चा प्रभावशाली ढंग से की जा सकती है। अन्तर्राष्ट्रीय

संगठनों की कुछ समस्याओं तथा कुछ ऐसे विवादास्पद विषयों की, जिनसे वे जूझते रहते हैं, विद्यार्थियों को जानकारी दी जा सकती है, बशर्ते कि उन्हें ऐसे विषयों पर निष्पक्ष भाव से विचार करने की पर्याप्त शिक्षा मिली हो। उनके अध्ययन को और व्यापक बनाया जा सकता है यदि उनका ध्यान संयुक्त राष्ट्र संघ की उन कार्यवाहियों की ओर खींचा जाय जिनका प्रभाव उन पर पड़ता है या जिनका सम्बन्ध उनकी व्यावसायिक रुचि से हो सकता है। इस उम्र में उन्हें किसी हद तक विशेष ज्ञान प्राप्त करने के लिए भी प्रोत्साहित करना चाहिए। नवयुवकों की आदर्शप्रियता की भावना को जगाना चाहिए परन्तु यह याद रखना अत्यन्त आवश्यक है कि नवयुवकों का जोश बहुत जल्दी निराशा में बदल सकता है और वे हताश हो सकते हैं। इस उम्र में प्रत्यक्ष शिक्षा दी जानी चाहिए। यह शिक्षा या तो नियमित कक्षाओं में दी जा सकती है अथवा राष्ट्र संघ व्यवस्था सम्बन्धी विशिष्ट पाठ्यक्रमों या विशिष्ट पाठमालाओं द्वारा सामाजिक विषयों (जैसे भूगोल, इतिहास, नागरिक शास्त्र आदि) के अध्ययन में इस प्रकार के पाठ्यक्रमों के लिए विशेष रूप से अच्छे अवसर मिलते हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ के कार्यों को समझाने के लिए, जहाँ तक हो सके रिकार्डिंग, सीधे प्रसारण (ब्राडकास्ट), चल-चित्रों तथा फिल्म-पट्टियों और परस्पर विचार-विमर्श और नाटकों जैसे अन्य तरीकों का इस्तेमाल करना चाहिए।

यह देखने में आयेगा कि यदि शिक्षा का सम्बन्ध अन्तर्राष्ट्रीय बाल आपातकालिक निधि से या युद्ध के कारण उजड़े हुए देशों में संयुक्त राष्ट्र संघीय शिक्षा, विज्ञान और संस्कृति संगठन (यूनेस्को) द्वारा शिक्षा के पुनर्निर्माण जैसी क्रियात्मक गतिविधियों से जोड़ा जाय तो बच्चे राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों के सिद्धान्तों को जल्दी और दृढ़ता के साथ ग्रहण कर लेंगे। किसी अन्य देश में स्थित किसी स्कूल के साथ अन्तर्राष्ट्रीय पत्र-व्यवहार करने और इस्तेमाल की हुई पुस्तकों के विनिमय को इसलिए प्रोत्साहित करना चाहिए कि लोगों को यह ज्ञान हो सके कि राष्ट्र संघ में कौन-कौन लोग हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों को प्रस्तुत करने के विशेष साधन

इसमें कोई शक नहीं कि बहुत-सी शिक्षा तो नियमित कक्षाओं में ही दी जाएगी। इसके अलावा बहुत-से और तरीके भी हैं जिनके द्वारा राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों को विद्यार्थियों के सम्मुख रखा जा सकता है। इनमें से कुछ को

नियमित शिक्षण के साथ जोड़ा जा सकता है और इससे निःसन्देह लाभ होगा। इनमें से कुछ निम्नलिखित हैं :

1. **बुलेटिन बोर्ड या दीवार पर चिपकाये जाने वाले समाचारपत्र (न्यूज़शीट)** : स्कूल में इन्हें प्रमुख स्थान पर लगाया जा सकता है और अध्यापक या स्कूल के पुस्तकाध्यक्ष की सहायता से विद्यार्थियों के एक दल द्वारा अथवा किसी एक विद्यार्थी द्वारा उन्हें ताजा रखा जा सकता है। विद्यार्थी स्वयं नक्शे, मानचित्र तथा रेखाचित्र बना सकते हैं अथवा समाचारपत्रों या पत्रिकाओं से कतरनें लेकर उन पर चिपका सकते हैं। जहाँ सम्भव हो, राष्ट्र संघ की कार्यवाहियों की ताजी खबरों की अखबारी कतरनें इसमें शामिल कर ली जाएँ।

2. **सभाएँ** : बहुत-से स्कूलों में सभी विद्यार्थी समय-समय पर व्याख्यानों, नाटकों, संगीत-गोष्ठियों या दूसरी सामूहिक कार्यवाहियों के लिए एक जगह इकट्ठे होते हैं। ऐसे मौकों पर राष्ट्र संघ के उद्देश्यों और कार्यवाहियों पर भाषण, विचार-विमर्श या प्रासंगिक चर्चा की जा सकती है।

3. **क्लब और अध्ययनदल** : दुनिया के कुछ भागों में स्वैच्छिक क्लबों और अध्ययन दलों का चलन है। इनमें से कुछ दलों का संगठन विशेषतः अन्तर्राष्ट्रीय विषयों का अध्ययन करने के लिए किया जाता है तथा अन्य क्लबों में जिन विषयों पर विचार किया जाता है उनमें अन्तर्राष्ट्रीय विषय भी शामिल कर लिये जाते हैं। लोगों के मन में राष्ट्रसंघीय व्यवस्था के प्रति रुचि पैदा करने के लिए ये दल बहुत लाभकारी हैं। 1947 में यूनेस्को ने स्वयं ही इस प्रकार के क्लबों की कार्यवाहियों, काम के तरीकों और सम्भावनाओं का दिग्दर्शन कराने वाली एक संक्षिप्त पुस्तिका फ्रेंच[1] और अंग्रेज़ी भाषा में प्रकाशित की थी जिसकी प्रतियाँ माँगने पर मिल सकती हैं।

4. **नमूने की (माडल) सभाएँ** : किसी एक स्कूल के विद्यार्थियों की या कई स्कूलों के विद्यार्थियों की यह इच्छा हो सकती है कि वे राष्ट्र संघ के किसी एक भाग के काम का अध्ययन करें और आर्थिक तथा सामाजिक परिषद या न्यासी (ट्रस्टीशिप) परिषद के नमूने की बैठकें या सभाएँ करें, जिनमें वे दर्शक की बजाय स्वयं हिस्सा लें। इन कार्यवाहियों में काफी काम करना पड़ता है और यह शायद सिर्फ कुछ देशों में ही किया जा सकता है, लेकिन थोड़े-बहुत प्रयोग, जो इस दिशा में किये गये हैं, बहुत सफल रहे हैं।

5. **स्कूलों के प्रकाशन** : कुछ स्कूलों की स्थिति इतनी अच्छी है कि वे या

1. International Relations Club and Similar Societies, Unesco, Paris, 1948.

तो अपने प्रकाशन स्वयं निकालते हैं अथवा साइक्लोस्टाइल या हाथ से लिखवाकर निकालते हैं और इनमें राष्ट्र संघ के बारे में सूचनाएँ देने की तरह-तरह की सुविधाएं होती हैं।

6. **स्कूल का पुस्तकालय :** दुनिया के बहुत से देशों में स्कूलों के पुस्तकालयों में सन्दर्भ पुस्तकें थोड़ी ही होती हैं, पर जिन स्कूलों में सन्दर्भ-पुस्तकें पर्याप्त संख्या में हों, वे राष्ट्र संघ के प्रति रुचि जगाने और उसे बढ़ाने में बहुत अधिक उपयोगी सिद्ध हो सकती हैं। आकर्षक ढंग से प्रदर्शित पुस्तकें, पुस्तिकाएँ और समाचारपत्रों और पत्रिकाओं की कतरनें, जिन्हें छात्र आसानी से समझ सकते हैं, राष्ट्र संघ के सामान्य कार्य में तथा उसके विशिष्ट कार्यों के प्रति रुचि पैदा करने में सहायक हो सकती हैं।

7. **प्रतियोगिताएँ :** राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों की जानकारी कराने के लिए, एक सफल माध्यम के रूप में, विभिन्न प्रकार की प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा सकता है। इनके बहुत से रूप हो सकते हैं जैसे निबन्ध, पोस्टर और सार्वजनिक भाषण आदि। कहीं-कहीं, स्कूल अधिकारियों के सहयोग से निजी दलों द्वारा भी इनका संगठन किया जा सकता है।

8. **समारोह :** विभिन्न देशों के स्कूलों में राष्ट्र संघ के सम्बन्ध में वार्षिक दिवस या सप्ताह सफलतापूर्वक मनाए जा चुके हैं, पर ऐसे समारोहों को इस तरह नहीं मनाना चाहिए कि एक बार मनाकर लोग अगले वर्ष तक के लिए उन्हें भूल जायें, बल्कि स्कूल के शिक्षा-कार्यक्रम में उनका उत्तरोत्तर समावेश करते रहना चाहिए या उनका आयोजन अधिक अध्ययन की प्रेरणा के रूप में होना चाहिए। 24 अक्टूबर को संयुक्त राष्ट्र संघ दिवस की चर्चा पहले ही की जा चुकी है और आशा की जाती है कि समय बीतने के साथ-साथ ज़्यादा-से-ज़्यादा स्कूल इस दिवस को मनायेंगे। इसको मनाने के लिए सुझाव, संयुक्त राष्ट्र संघ के सूचना केन्द्रों से (पते के लिए परिशिष्ट 'घ' देखिए) या न्यूयार्क राज्य में लेक सक्सेस में स्थित संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्य कार्यालय से प्राप्त किये जा सकते हैं।

9. **झाँकियाँ और मेले :** संयुक्त राष्ट्र संघ को नाटकीय ढंग से प्रस्तुत करने के लिए नाटक, नृत्य, मूक अभिनय, झाँकियों और मेलों का भी आयोजन किया जा सकता है। इनमें अक्सर भावात्मक आकर्षण होता है जो दूसरी तरह के प्रदर्शनों में नहीं पाया जाता।

10. **यात्राएँ :** केवल बहुत थोड़े विद्यार्थी लेक सक्सेस स्थित संयुक्त राष्ट्र संघ के मुख्य कार्यालय को देखने जा सकते हैं, परन्तु जो लोग ऐसा कर सकते हैं उनका अनुभव बहुत विशद और महत्त्वपूर्ण होगा, यदि उनकी यह यात्रा ठीक

प्रकार से आयोजित और क्रियान्वित की जाय। कुछ विद्यार्थियों को उन दूसरे स्थानों पर भी ले जाया जा सकता है जहाँ संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों द्वारा किसी प्रायोजना पर काम किया जा रहा हो।

11. **युवक सेवा शिविर और पुर्ननिर्माण प्रायोजनाएँ :** समय-समय पर विद्यार्थी पुर्ननिर्माण प्रायोजनाओं में और अन्तर्राष्ट्रीय युवक सेवा शिविरों में भाग ले सकते हैं और इस तरह राष्ट्र संघ के काम में अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग दे सकते हैं। इससे अध्ययन में यथार्थता की भावना पैदा होगी। यूनेस्को इस प्रकार के कई शिविरों में सक्रिय सहायता दे रहा है और यदि कोई इस सम्बन्ध में पूछताछ करना चाहे तो उसे यह सूचना सहर्ष दी जाएगी।

12. **प्रदर्शनयोग्य वस्तुएँ :** संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों और गतिविधियों को समझने के लिए विद्यार्थियों द्वारा अथवा बाहर के अभिकरणों द्वारा तैयार की गयी प्रदर्शनयोग्य वस्तुएँ बहुत मूल्यवान सिद्ध हो सकती हैं।

13. **अतिथिगण :** जहाँ सम्भव हो, वहाँ उन लोगों को बातचीत करने और भाषण करने के लिए बुलाना चाहिए जिन्हें राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों का अनुभव या ज्ञान हो।

अध्यापकों की शिक्षा

संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों के अध्ययन के किसी कार्यक्रम को चलाने के लिए सबसे पहली बात यह है कि ऐसे अध्यापक मिलें जिनकी इसमें अभिरुचि हो और जिन्हें इनके बारे में काफी जानकारी भी हो।

प्रशिक्षण की योजनाएँ उन सभी स्त्री-पुरुषों पर लागू होनी चाहिएँ जो इस समय अध्यापक बनने की तैयारी कर रहे हैं और उससे भी बड़े दल अर्थात् उन अध्यापकों पर भी लागू होनी चाहिएं जो पहले से पढ़ा रहे हैं। चूँकि राष्ट्र संघ और उसके अभिकरण बिल्कुल नये हैं इसलिए इसका मतलब देश-भर के लगभग सभी अध्यापकों को शिक्षा देने के भारी काम का बीड़ा उठाना होगा।

कार्यक्रम का उद्देश्य यह नहीं होना चाहिए कि अध्यापकों में इस तरह का प्रचार किया जाय कि वे संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों की आँख मूँदकर हिमायत करें और इनकी आलोचना न करें। बल्कि इस कार्यक्रम का उद्देश्य यह होना चाहिए कि अध्यापक इस व्यापक अन्तर्राज्यीय व्यवस्था के महत्व को समझ सकें और यह जान सकें कि उन्हें अपने छात्रों के सामने किस तरह प्रस्तुत करना है। इससे उन्हें यह समझने में सहायता मिलनी चाहिए कि सफलता अन्ततः सभी लोगों के सहयोग और समर्थन पर ही निर्भर है। कुछ देशों में, इस काम में इस बात

से उलझन पैदा होती है कि अध्यापक राष्ट्र संघ का सम्बन्ध सिर्फ किसी विवाद-विशेष से जोड़ देते हैं जो राष्ट्र संघ को सौंपा गया हो। चालू अन्तर्राष्ट्रीय समस्याओं से सम्बन्धित सिद्धान्तों पर स्पष्ट विचार-विमर्श इसलिए आवश्यक है कि इन अध्यापकों का राष्ट्र संघ के प्रति एक व्यापक दृष्टिकोण बने।

यूनेस्को का विश्वास है कि अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना के विषय में, छात्रों को शिक्षित करने के लिए अध्यापकों को तैयार करने के उद्देश्य से अन्तर्राष्ट्रीय, राष्ट्रीय और प्रादेशिक स्तरों पर शैक्षणिक गोष्ठियाँ मूल्यवान माध्यम बन सकती हैं। "विश्व-समाज के लिए शिक्षा : अध्यापकों की शिक्षा और प्रशिक्षण" शीर्षक के अन्तर्गत यूनेस्को ने जुलाई-अगस्त 1948 में लन्दन के समीप एक अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठी आयोजित की थी। 22 देशों के 47 व्यक्तियों ने इसमें भाग लिया था। इस प्रकार की अन्तर्राष्ट्रीय गोष्ठियों में भाग लेने वाले लोग छोटे-छोटे समूह बनाकर विचार-विमर्श करते हैं और अपनी-अपनी समस्याओं का हल निकालते हैं। आशा की जाती है कि इनमें भाग लेने वाले बहुत-से लोग घर लौटने पर राष्ट्रीय गोष्ठियों का संगठन करने में सहायक होंगे। इन गोष्ठियों को ऐसे अध्यापकों की संख्या बढ़ाने में एक प्रभावशाली माध्यम होना चाहिए जो राष्ट्र संघ के उद्देश्यों और आदर्शों के समर्थक हों और उसे सफल बनाने, मजबूत करने और सुधारने में सच्ची रुचि रखते हों।

अध्यापकों को तैयार करने वाली संस्थाओं के लिए इस बात पर विचार करना अच्छा होगा कि निम्न विषय उनके कार्यक्रमों के लिए कितने सहायक सिद्ध होंगे:

1. वर्तमान पाठ्यक्रमों में संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों पर विचार।

2. संयुक्त राष्ट्र संघ व्यवस्था पर विशेष पाठ्यक्रम।

3. पर्याप्त सामग्री से भरपूर पुस्तकालय।

4. संयुक्त राष्ट्र संघ के विभिन्न पहलुओं पर विशेष निबन्ध और गवेषणा।

5. संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों पर भाषण, फिल्म (चल-चित्र) प्रदर्शन और रेडियो कार्यक्रम।

6. संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों सम्बन्धी बुलेटिन बोर्ड, पठनीय पुस्तकों की सूचियाँ तथा प्रदर्शनयोग्य वस्तुएँ।

7. संयुक्त राष्ट्र संघ व्यवस्था पर विचार-विमर्श दल, क्लब तथा इस सम्बन्ध में सूचना और विचारों के आदान-प्रदान के अन्य साधन।

8. विदेश यात्रा के अवसर।

जो लोग पहले से ही अध्यापन-कार्य में लगे हैं उन्हें राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों के बारे में जानकारी देने के बहुत-से साधन हो सकते हैं; जैसे :

1. शिक्षा सम्बन्धी पत्रिकाओं में लेख और सचित्र विवरण।

2. स्कूल में ही अध्यापकों की सभा में अथवा कई स्कूलों के अध्यापकों की सभाओं में भाषण, विचार-विमर्श और फिल्म आदि।

3. व्यक्तिगत रूप में अध्ययन करने के लिए सुझाव और शिक्षा मंत्रालय, शिक्षक संगठनों, पुस्तकालयों और अन्तर्राष्ट्रीय विषयों में दिलचस्पी रखने वाले संगठनों द्वारा तैयार की गयी पठनीय सामग्री की सूचियों की व्यवस्था।

4. संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों पर शिक्षकों के लिए विशेष बुलेटिन।

5. इन विषयों में दिलचस्पी रखने वाले लोगों के बीच पत्र-व्यवहार द्वारा जानकारी और विचारों का आदान-प्रदान।

6. राष्ट्रीय गोष्ठियाँ, ग्रीष्मकालीन स्कूल और ग्रीष्मावकाश के पाठ्यक्रम। इनमें वे विद्यार्थी भी भाग ले सकते हैं जो अध्यापक बनने के लिए प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं।

7. राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों पर चलती-फिरती प्रदर्शनियाँ।

समाज और राष्ट्र के अन्य समूहों से सहयोग

बहुत-से समुदायों में केवल स्कूलों के माध्यम से ही बच्चों और युवकों को शिक्षा नहीं दी जाती। अन्य वर्ग कुछ सरकारी तथा स्वेच्छिक संस्थाएँ भी नवयुवकों के जीवन पर प्रभाव डालने में सहायक होती हैं। उनसे आग्रह करना चाहिए कि वे स्वतंत्र रूप से या ज़्यादा अच्छा होगा कि अध्यापकों और स्कूल-अधिकारियों से मिलकर राष्ट्र संघ के कतिपय पहलुओं की जानकारी कराने में भाग ले। कुछ देशों में इस प्रकार के बहुत-से अभिकरण हैं जैसे गिरजाघर, श्रमिक दल, सेवा कार्य करने वाले दल, कृषक संगठन और महिला क्लब। सार्वजनिक पुस्तकालयों, स्थानीय संग्रहालयों, नाट्य गृहों, सिनेमाओं, स्थानीय समाचारपत्रों और रेडियो स्टेशन की भी सहायता ली जा सकती है।

स्थानीय समाज में जिन साधनों के प्रयोग की चर्चा ऊपर की गयी है वह राष्ट्र के साधनों पर भी लागू होती है। राष्ट्रीय संगठन जिनमें शिक्षा मन्त्रालय से लेकर स्वैच्छिक संस्थाएँ तक शामिल हैं, सामग्री आदि तैयार करके, वक्ताओं की व्यवस्था करके, प्रतियोगिताओं को प्रोत्साहन देकर तथा अन्य दूसरे उपायों द्वारा

राष्ट्र संघ के बारे में स्कूल के बच्चों को जानकारी करा सकते हैं। अध्यापकों को भी यह जानना चाहिए कि राष्ट्रीय संगठन किस प्रकार उनकी सहायता कर सकते हैं और उन्हें भरसक उनकी सेवाओं का पूरा लाभ उठाना चाहिए। कभी-कभी अध्यापक अपने-आप पहल करके उन संगठनों से यह कह सकते हैं कि किस प्रकार की सहायता की सबसे अधिक आवश्यकता है।

पर्याप्त सामग्री की आवश्यकता

बहुत-से मामलों में, राष्ट्र संघ और उसके अभिकरणों के बारे में शिक्षा देने में सबसे बड़ी बाधा यह नहीं है कि लोगों में दिलचस्पी की कमी है बल्कि यह कि उपर्युक्त सामग्री कम है और कहीं-कहीं तो इसका सर्वथा अभाव है। शिक्षा की स्थिति तथा उसके तरीके हर देश में अलग-अलग हैं, इसलिए अधिकांश सामग्री देश-विशेष में ही उन्हीं लोगों द्वारा तैयार की जानी चाहिए जो इस विषय से, वहाँ के बच्चों और सम्बन्धित देश से, पूर्णत: परिचित हों।

उपर्युक्त सामग्री तैयार कराने में सहायता देने के इरादे से यूनेस्को ने संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों की शिक्षा के बारे में एक गोष्ठी का आयोजन 1948 के जुलाई और अगस्त मास में किया था। संयुक्त राष्ट्र संघ के सहयोग से यह गोष्ठी लेकसक्सेस के अडेल्फी कालिज में हुई थी। इसका मुख्य प्रयोजन था स्कूलों में लगभग 18 वर्ष तक की आयु के बच्चों को संयुक्त राष्ट्र संघ की जानकारी दिलाने के सबसे अच्छे तरीकों का अध्ययन करना तथा जिन देशों के प्रतिनिधियों ने इसमें भाग लिया था वहाँ के स्कूलों में प्रयोग के लिए नमूने की सामग्री तैयार करना। 25 देशों के 35 प्रतिनिधि उपस्थित थे और बहुत-सी पुस्तिकाएँ, अध्ययन निर्देशिकाएँ, रेडियो पर प्रसारित की जानेवाली वार्ताएँ, ध्वनि अभिलेखन (रेकार्डिंग) सामग्री और फिल्म-पट्टियाँ तैयार की गयीं। इसमें भाग लेने वाले प्रतिनिधियों ने स्वदेश लौटने पर और सामग्री भी तैयार की।

हर देश को अपनी आवश्यकताओं का सर्वेक्षण करने की जरूरत पड़ेगी। अधिकतर मामलों में यह देखने में आयेगा कि अनेक प्रकार के विषयों पर जैसे "संयुक्त राष्ट्र संघ और भूगोल की शिक्षा", "संयुक्त राष्ट्र संघ और नागरिक शिक्षा" या "संयुक्त राष्ट्र संघ और विज्ञान की शिक्षा" पर सामग्री की आवश्यकता पड़ेगी। इस सम्बन्ध में लेखमाला या संक्षिप्त निबन्ध तैयार करना उपयोगी हो सकता है। इनमें से प्रत्येक में यह बताया जाएगा कि राष्ट्र संघ की प्रासंगिक चर्चा वर्तमान पाठ्यक्रम में किस प्रकार समाविष्ट की जा सकती है और इस सम्बन्ध में विशेष अध्ययन का विकास किस प्रकार किया जा सकता है। बहुत-से

देशों में संयुक्त राष्ट्र संघ व्यवस्था के विभिन्न पहलुओं पर विभिन्न आयु के बच्चों के लिए संक्षिप्त और सचित्र विवरण सरल भाषा में तैयार करने की आवश्यकता पड़ेगी। कुछ मामलों में संयुक्त राष्ट्र संघ और राष्ट्र संघ (लीग आफ नेशन्स) का तुलनात्मक अध्ययन सहायक होगा। बहुत-से राष्ट्र सभी विशेष अभिकरणों का संक्षिप्त विवरण किसी एक प्रकाशन में प्रस्तुत कर सकते हैं अथवा प्रत्येक अभिकरण के लिए अलग-अलग पुस्तिकाएँ निकाल सकते हैं। एक ऐसा विवरण भी बहुत सहायक सिद्ध होगा जिसमें यह बताया जाय कि संयुक्त राष्ट्र संघ ने किसी विशेष समस्या का सामना किस प्रकार किया। इस विषय को सजीव और रोचक ढंग से प्रस्तुत करने में जो सामग्री शिक्षकों के लिए सहायक हो सकती है उसके उत्पादन के और भी बहुत से तरीके संभव हैं, किन्तु उनमें-से यहाँ कुछ की ही चर्चा की गयी है।

यूनेस्को उन देशों की सहायता करने की एक योजना पर काम कर रहा है जो अपनी पाठ्य-पुस्तकों और शिक्षा-सम्बन्धी सामग्री का इस दृष्टिकोण से निरीक्षण करेंगे कि उनमें इस तरह का सुधार कर दिया जाय जिससे कि वे अन्तर्राष्ट्रीय जानकारी बढ़ाने में सहायक सिद्ध हों। पाठ्य-पुस्तकों के विश्लेषण की एक आदर्श योजना का मसौदा तैयार हो चुका है। विभिन्न देशों के विशेषज्ञों द्वारा इसकी जाँच किये जाने के बाद यूनेस्को सदस्य-देशों को इस बात का सुझाव देगा कि वे इन सिफ़ारिशों के अनुसार अपनी पाठ्य-पुस्तकों पर पुनर्विचार करें। राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों के बारे में, जहाँ उचित हो, सूचना देने के महत्व पर ज़ोर दिया गया है।

बहुत-से कारणों से, सामग्री का बहुत बड़ा हिस्सा राष्ट्रीय स्तर पर तैयार किया जाना चाहिए और आशा की जाती है कि भविष्य में यूनेस्को, संयुक्त राष्ट्र संघ और अन्य अन्तर्राष्ट्रीय संगठन "मौलिक सामग्री" बुनियादी तथ्य और उदाहरण की व्यवस्था अधिकाधिक करेंगे ताकि उसका इस्तेमाल राष्ट्रीय आधार पर किया जा सके।

कुछ तैयार सामग्री का निर्माण भी अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया जा सकता है। यूनेस्को ने अपने सदस्य-राज्यों के स्कूलों के बारे में संयुक्त राष्ट्र संघ आर उसके विशेष अभिकरणों से सम्बन्धित एक रिपोर्ट निकाली है। यह रिपोर्ट एक विस्तृत सर्वेक्षण के आधार पर तैयार की गयी है। इसके लिए प्रश्नमालाएँ भेजी गयी थीं जिनके उत्तर 1947-48 में प्राप्त हुए थे। इस रिपोर्ट में (दस्तावेज़ 2 ग। 60) उस सामग्री की एक सूची दी गयी है जो अब कई देशों में मिलती है। यूनेस्को ने अन्तर्राष्ट्रीय जानकारी के लिए शिक्षा-सम्बन्धी ग्रन्थों की एक सूची तथा उसी

वषय पर फिल्मों और फिल्म-पट्टियों की तालिका का मसौदा भी तैयार किया है। इसने 12 और 15 वर्ष की आयु के बालकों में दिलचस्पी पैदा करने के लिए "आओ यूनेस्को भवन चलें" शीर्षक से तथा 15 और 18 वर्ष की आयु के बालकों के लिए "आप और यूनेस्को" शीर्षक से दो पुस्तिकाएं प्रकाशित की हैं। आशा की जाती है कि विभिन्न देश अपनी आवश्यकतानुसार इन दोनों पुस्तकों में संशोधन और परिवर्धन करके अपने स्कूलों में उपयोग के लिए इन्हें पुन: प्रकाशित करेंगे।

जिन अध्यापकों को अन्तर्राष्ट्रीय जानकारी सम्बन्धी शिक्षा में दिलचस्पी है, उनके लिए बहुत सी अन्य सामग्री वितरण के लिए तैयार है। इस सम्बन्ध में यूनेस्को के शिक्षा-विभाग से पूछताछ करनी चाहिए।

राष्ट्र संघ के सार्वजनिक सूचना विभाग के शिक्षा सेवा प्रभाग के पास भी स्कूलों में उपयोग के लिए कुछ "तैयार सामग्री" पड़ी है। उदाहरणार्थ इसने अभी हाल में "राष्ट्र संघ के बारे में प्रत्येक व्यक्ति के लिए निर्देशिका" (Every man's Guide to the United Nations) तथा "लोग किस प्रकार इकट्ठे कार्य करते हैं" (How People Work together) नामक दो पुस्तकें प्रकाशित की हैं। इसके अतिरिक्त यह प्रभाग समय-समय पर उन फिल्मों, फिल्म पट्टियों, पोस्टरों और प्रकाशनों की सूचियां जारी करता रहता है जिन्हें वह खास तौर पर स्कूलों के लिए उपयुक्त समझता है और उनकी सिफारिश करता है।

कुछ गैर-सरकारी संगठनों ने भी स्कूलों में इस्तेमाल के लिए सामग्री तैयार की है और उदाहरणार्थ विभिन्न अध्यापक दलों आदि ने तथा संयुक्त राष्ट्र संघीय संस्थाओं के विश्व संघ की कुछ राष्ट्रीय संस्थाओं ने उपयोगी दस्तावेज तैयार किये हैं।

शिक्षा अधिकारियों के निर्देशों का महत्त्व

बहुत से देशों में शिक्षा-मंत्रालय ही हर किस्म के स्कूल के लिए पाठ्यक्रम निर्धारित करता है और यह निश्चय करता है कि किन बातों पर विशेष बल दिया जाना चाहिए। उन देशों में भी, जहां शिक्षा का विकेन्द्रीकरण अधिक है, कोई न कोई शिक्षा सम्बन्धी प्राधिकरण है जो स्कूलों के कार्यक्रमों के बारे में परामर्श देता है।

चूंकि शिक्षा अधिकारी राष्ट्र संघ की शिक्षा के किसी कार्यक्रम पर एक गहरा प्रभाव डाल सकते हैं, इसलिए आशा है कि पिछले पृष्ठों में जिन सुझावों का उल्लेख किया गया है वे उनका स्वागत करेंगे और समर्थन करेंगे।

INSTITUTE OF ADVANCED
Acc. No. 35633
Date 3.2.71

सूचना और परामर्श

इस छोटी-सी पुस्तिका में, जो सुझाव दिये गये हैं उनमें जिन अध्यापकों को रुचि है वे और सूचना तथा परामर्श लेना चाहेंगे। अगले पृष्ठ पर वहुत-सी उन संस्थाओं के विवरण दिये गये हैं—जिनमें से कुछ की चर्चा पहले ही की जा चुकी है—जो इस सम्बन्ध में उनकी सहायता कर सकते हैं।

यूनेस्को के राष्ट्रीय आयोग : ये आयोग यूनेस्को के 36 सदस्य-देशों में हैं। इनका मुख्य काम, इन देशों में चलनेवाले यूनेस्को के कार्यक्रमों में सहायता देना है। कुछ मामलों में इन आयोगों का सम्बन्ध विशेषतः यूनेस्को के उस काम से है जिसके द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय जानकारी के लिए शिक्षा का विकास किया जाता है। ये आयोग शिक्षकों के लिए सामग्री और सुझाव भी तैयार करते हैं (इनके पतों के लिए परिशिष्ट 'ख' देखिए)।

शिक्षा मंत्रालय : अध्यापक अपने शिक्षा-मंत्रालय को परामर्श और सूचना के लिए सीधे ही लिख सकते हैं।

गैर-सरकारी संगठन : बहुत से गैर-सरकारी संगठनों की इस बात में दिलचस्पी होती है कि वे लोगों को संयुक्त राष्ट्र संघ के उद्देश्यों और उसकी गति-विधियों से अवगत करायें। इनमें सबसे प्रमुख संयुक्त राष्ट्र संघीय संस्थाओं का विश्व संघ है। यह 33 राष्ट्रीय संस्थाओं का स्वैच्छिक गैर-सरकारी संघ है। इन संस्थाओं का रूप राष्ट्र संघ के समर्थन के लिए जन-आन्दोलन का है। 25 देशों में इन्होंने शिक्षा समितियाँ स्थापित की हैं जिनका मुख्य काम स्कूलों में संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों की शिक्षा को प्रोत्साहन देना है (उनके पतों की एक सूची परिशिष्ट 'ग' में दी गई है)।

संयुक्त राष्ट्र संघ : संयुक्त राष्ट्र संघ के सार्वजनिक सूचना विभाग का शिक्षा सेवा प्रभाग, जो यूनेस्को के साथ मिल-जुलकर काम कर रहा है, प्रकाशन तथा अन्य सामग्री, जिसकी पहले चर्चा की गई है, के अतिरिक्त राष्ट्र संघ के बारे में दिन-प्रतिदिन की तथ्यात्मक सामग्री देता है। इस सम्बन्ध में जानकारी संयुक्त राष्ट्र संघीय सूचना-केन्द्रों से प्राप्त करनी चाहिए (जिनके पते परिशिष्ट 'घ' में दिये गये हैं) या न्यूयार्क राज्य में लेक सक्सेस में स्थित राष्ट्र संघ के मुख्यालय से जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

संयुक्त राष्ट्र संघीय शिक्षा, विज्ञान तथा संस्कृति संगठन : यूनेस्को का मुख्य कार्य यह है कि वह संसार के विभिन्न भागों में शिक्षा के विकास, उसके तरीकों और उसकी समस्याओं की सूचनाओं के प्रसार-केन्द्र के रूप में काम करे। पिछले दो वर्षों में अपने सामान्य सम्मेलन की हिदायतों के अनुसार और संयुक्त

राष्ट्र संघ के परामर्श से यूनेस्को का शिक्षा विभाग संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों के बारे में शिक्षा देने के कार्य को प्रोत्साहित करने और सहायता देने का कार्य कर रहा है। यह शिक्षा के कार्यक्रमों और विशेष गति विधियों के बारे में सूचना दे सकता है। यह वे सुझाव भी दे सकता है जो इस पुस्तिका में बताये गये हैं और बहुत-से देशों में इस्तेमाल के लिए, किसी हद तक सामग्री भी दे सकता है। इस सम्बन्ध में पत्र-व्यवहार सामान्यत: राष्ट्रीय आयोग के मार्फत करना चाहिए, पर यूनेस्को के साथ उसके पेरिस XVI[e] 19 एवेन्यू क्लेबर में स्थित मुख्य कार्यालय से भी सीधे पत्र-व्यवहार किया जा सकता है।

निष्कर्ष : अन्त में एक बार फिर इस बात पर जोर दिया जाना चाहिए कि संयुक्त राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों की शिक्षा को एक बहुत बड़े व्यापक कार्यक्रम का अंग—यद्यपि यह एक महत्वपूर्ण भाग है—समझना चाहिए, जो नवयुवकों में अन्तर्राष्ट्रीय जानकारी का विकास करने में और उनमें स्थानीय समाज, राष्ट्र और भविष्य के विश्व समाज के प्रति ज़िम्मेदारी की भावना पैदा करने में सहायक होगा। यह एक दीर्घकालीन और विश्वव्यापी कार्य है जो मानव जाति के कल्याण और विश्व-शान्ति की स्थापना में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकता है।

परिशिष्ट (क)

सार्वजनिक शिक्षा सम्बन्धी ग्यारहवें अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन में जिन तीन विषयों पर विचार किया गया था उनमें से एक, राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों के बारे में शिक्षा देने पर था। इस सम्मेलन में 46 देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। इस पुस्तिका के पहले मसौदे को विचार-विमर्श का आधार बनाया गया था। निम्न सिफारिशें तैयार की गईं और सर्वसम्मति से मान ली गईं, केवल एक देश के प्रतिनिधि ने मत नहीं दिया।

अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के बारे में शिक्षा देने और नवयुवकों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव का विकास करने से सम्बन्धित शिक्षा मंत्रालयों के लिए की गई सिफारिशें :

सार्वजनिक शिक्षा सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, यूनेस्को और शिक्षा सम्बन्धी अन्तर्राष्ट्रीय कार्यालय ने जिनेवा में आमन्त्रित किया था और इस ग्यारहवें सम्मेलन ने 28 जून को एकत्र होकर 2 जुलाई 1948 को निम्न सिफारिशें मंजूर कीं :

सम्मेलन, यह विचार करते हुए

कि आजकल शिक्षा के मुख्य उद्देश्यों में से एक उद्देश्य यह होना चाहिए कि इसके द्वारा ऐसे बच्चे और नवयुवक तैयार किये जाएँ, जो सत्यनिष्ठ और सक्रिय होकर एक ऐसे विश्व-समाज का निर्माण कर सकें जिसमें प्रचुर विविधताओं के होते हुए भी शान्ति, सुरक्षा तथा प्रत्येक मनुष्य के लिए भरपूर जीवन जैसे लक्ष्यों के प्राप्त करने में एकता हो :

कि इस तैयारी की अवधि में न सिर्फ उन्हें दक्षता ही प्राप्त करनी चाहिए; बल्कि खास तौर पर इस प्रकार का मानसिक दृष्टिकोण उत्पन्न और विकसित भी करना चाहिए, जो आगे चलकर एकतामूलक विश्व के निर्माण, संरक्षण और उसकी उन्नति के अनुकूल सिद्ध हो सके,

कि इस तैयारी को विश्व के विभिन्न देशों की शिक्षा की विशिष्ट स्थितियों तथा सभी अवस्था के स्कूल के बच्चों की क्षमता के अनुसार ढालना चाहिए,

विभिन्न देशों के शिक्षा मंत्रालयों के सामने निम्न सिफारिशें प्रस्तुत करता है :

1. कि सभी प्रकार की शिक्षा, अन्तर्राष्ट्रीय एकता का ज्ञान कराने और उसके प्रति जागरूक बनाने में सहायक होनी चाहिए।

2. कि सभी शिक्षा संस्थाओं में जीवन-चर्या इस प्रकार संगठित की जानी चाहिए कि विद्यार्थियों और छात्रों में सामाजिक सहयोग और ज़िम्मेदारी की भावना का विकास हो। यह बात लोगों में अधिक सद्भावना बढ़ाने के लिए ज़रूरी है। सामाजिक जीवन के विभिन्न रूपों का गठन अध्ययन काल के अलग-अलग दौर में इस प्रकार किया जाय कि युवकों में कल के विश्व के प्रति रुचि पैदा हो।

3. कि विश्व समुदाय के प्रति कर्तव्य की भावना का विकास, नागरिक कर्तव्यों के विस्तार के रूप में किया जाय।

4. कि ऐतिहासिक विकास की अनुभूति और राष्ट्रों में पारस्परिक आदर-भाव पर आधारित अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव को सभी यथासम्भव उपायों से प्रोत्साहित किया जाना चाहिए जिसमें, उदाहरणार्थ, मानव प्रगति के महान प्रवर्तकों के स्मृति-समारोह और ऐसे विशेष दिवसों को मनाने के कार्यक्रम शामिल किये जा सकते हैं, जिनमें लोगों की विश्वव्यापी रुचि हो।

5. कि राष्ट्र संघ और उसके विशेष अभिकरणों, उनके प्रयोजन और सिद्धान्तों, उनके ढाँचे और कार्यों का निरपेक्ष रूप से, तथा बहुत सूक्ष्मता से ठीक-ठीक अध्ययन करना चाहिए। इन संस्थाओं की, चाहे कुछ भी कमज़ोरियाँ क्यों न हों, पर इन्हें एकीकृत तथा उत्तरोत्तर बढ़ने वाली व्यवस्था के ही रूप में देखना चाहिए तथा यह समझना चाहिए कि ये अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव बढ़ाने, युद्ध की महामारी दूर करने, सैद्धान्तिक मानव अधिकारों में विश्वास प्रकट करने, न्याय स्थापित करने, सामाजिक उन्नति को प्रोत्साहित करने और स्वतन्त्रता और सभी लोगों का जीवन-स्तर ऊँचा करने के लिए, मनुष्य के बहुत लम्बे समय से किये जा रहे प्रयत्नों की लम्बी शृंखलाओं का एक भाग है।

6. कि चूँकि यह शिक्षा नयी और जटिल है और इसका प्रभाव दिल और दिमाग दोनों पर समान रूप से पड़ना चाहिए, इसलिए जो अध्यापक स्वयं अन्तर्राष्ट्रीय सद्भावना से ओत-प्रोत हों उन्हें खास तौर पर इस प्रकार प्रशिक्षित

करना चाहिए कि वे सभी प्रकार से शिक्षा के अभिन्न अंग के रूप में इसकी प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष दोनों प्रकार से शिक्षा दे सकें।

7. कि स्थानीय संगठन, जैसे सार्वजनिक पुस्तकालय, संग्रहालय, युवक क्लब, गर्ल गाइड्स और ब्वाय स्काउट दलों को स्कूल-अधिकारियों से मिलजुल कर नवयुवकों में सहयोग की भावना का विकास करने में सहायता देनी चाहिए। इसके साथ ही इन्हें राष्ट्र संघ और इसके विशेष अभिकरणों और इससे सम्बद्ध संगठनों की भी जानकारी करानी चाहिए।

8. कि इस बात का ध्यान रखते हुए कि वयस्कों का, माता-पिता और नागरिकों के रूप में भी उत्तरदायित्व होता है उन्हें लोकप्रिय वयस्क शिक्षा के माध्यम से अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के बारे में यथेष्ट जानकारी देने के लिए उचित कदम उठाने चाहिएँ।

9. कि समुचित दृश्य-श्रव्य सम्बन्धी सामग्री तथा दूसरी सामग्री यह देखते हुए तैयार की जानी चाहिए कि उन युवकों और वयस्कों की, जिनके सामने इन्हें प्रस्तुत किया जाना है, आयु क्या है और उनका मानसिक विकास कहाँ तक हुआ है। यह भी ध्यान रखना होगा कि चलचित्र ऐसे बनाये जाएँ, जो सुन्दरता या कला की दृष्टि से सन्तोषजनक हों। इन चित्रों को बनाते समय युवकों और वयस्कों को इस बात के लिए प्रेरित करना चाहिए कि वे इनकी तैयारी में भाग लें। ऐसी सामग्री की रूपरेखा बच्चों के उस मनोवैज्ञानिक अध्ययन को सामने रखकर तैयार करनी चाहिए जिससे यह पता चलता हो कि बच्चों पर फिल्मों की क्या प्रतिक्रिया होती है। इस सामग्री के व्यापक वितरण का भी अच्छा प्रबन्ध होना चाहिएं।

10. कि विभिन्न देशों की पाठ्य-पुस्तकों की, जहाँ तक सम्भव हो, बार-बार इस दृष्टिकोण से जाँच करते रहना चाहिए कि ऐसे परिच्छेदों को पुस्तकों से निकाल दिया जाए जिनसे राष्ट्रों में गलतफहमी पैदा होती हो और ऐसी सामग्री शामिल की जा सके जिससे विश्व-सहयोग का पूर्ण बोध हो सके।

11. कि विभिन्न देशों के शिक्षा अधिकारी अपने अनुभवों का अधिकतम लाभ उठाने की दृष्टि से, इस शिक्षण के स्वरूप और उसके परिणामों के बारे में सूचनाओं तथा विचारों का आपस में आदान-प्रदान करें।

12. कि नवयुवकों में अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव पैदा हो, इस बात को प्रोत्साहित करने के लिए शिक्षा मंत्रालय तथा अन्य शिक्षा अधिकारी अपने प्रभाव का उपयोग करें तथा ऐसे अन्तर्राष्ट्रीय संगठनों के बारे में शिक्षा देने में सहायता करें, जो विश्व-शान्ति को बढ़ावा देने के लिए काम कर रहे हैं।

APPENDIX—B

UNESCO NATIONAL COMMISSIONS AND CO-OPERATING BODIES

Afghanistan

Unesco Interim Committee, Ministry of Public Instruction, Kabul.

Argentina

Junta Nacional de Intelecruales.
Uruguay 725 (Ier piso), Buenos Aires.

Australia

Co-ordinating Committee of the National Co-operating Bodies for Unesco, Commonwealth Office of Education, Grace Building York Street, (Box 3879) Sydney, New South Wales.

Austria

Austrian Commission for Unesco, 5 Burgring, Vienna I.

Belgium

Commission Nationale de l'Unesco, Ministere de l'Instruction Publique, Residence Planace, rue de la Loi, Bruxelles.

Brazil

Institut bresilien de l' Education, de la Science et de la Culture, Ministere des Affaires etrangeres, Palacio de Itamaraty, Rio De Janeiro.

China

The Chinese National Commission for Unesco, Ministry of Education, Canton.

Colombia

Conseil superieur de l'Education Nationale (Commission permanente de Colombie aupres de l'Unesco), Edificio Antonio Narino 215, Carrera 6a, No. 14-50, Bogota.

Cuba

Commission nationale cubaine de l'Unesco, Ministere d'Etat, La Havane.

Denmark

The Danish National Commission for Unesco, Ministry of Education, Copenhagen.

Dominican Republic

Commission dominicaine de Co-operation intellectuelle, Secretariat d'Etat des Relations exterieures, Ciudan truijillo.

Ecuador

Commission nationale de l'Equateur, Ministere de l'Education nationale, Quito.

France

Commission nationale pour l'Education, la Science et la Culture, a.b.s. du Service francais de l'Unesco, 37, Quai d'Ors, Paris.

Haiti

Comite national haitien de Co-operation avec l'Unesco, Secretariat d'Etat des Relations exterieures, Port-au-Prince.

Honduras

Commission nationale de l'Unesco, Department de l'Instruction publique, Secretariat d'Etat, Tegucigalpa, D.C.

Hungary

Commission nationale hongroise pur l'Unesco, Ministere des Affairs etrangeres, Budapest.

India

Indian National Commission for Co-operation with Unesco, Ministry of Education, Government of India, New Delhi.

Iran

Commission nationale iranienne pur l'Unesco, Avenue Musee, Teheran.

Iraq

Iraqi National Commission for Unesco, Ministry of Education, Bagdad.

Italy

Commission Nationale italienne de l'Unesco, Villa Massimo, Piazza di Villa Massimo No. 2, Rome.

Lebanon

Commission nationale libanaise pour l'Education, la Science et la Culture, Miniteres de l'Education nationale et des Beauz-Arts, Beyrouth.

Mexico

Commission permanente du Mexique aupres de l'Unesco, Ministere de l'Education publique, Mexico, D.F.

The Netherlands

The Netherlands Commission for International Co-opera-

tion, Ministry of Education, Arts and Sciences, Princessegracht 19, The Hague.

New Zealand

National Commission for Unesco, Education Department, Wellington.

Norway

Norwegian National Commission for Unesco, Royal Norwegian Ministry of Church and Education, Cultural Section 3, Bygdo Alle, Oslo.

Peru

Commission nationale du Perou aupres de l'Unesco, Ministere des Relations eterieures, Lima.

The Philippines

National Commission on Educational, Scientific and Cultural Matters, 3336 Taft Avenue, Rizal City.

Poland

Commission nationale polonaise pur l'Education, is Science et la Culture, Ministere de l'Instruction publique, allee de la Premiere Armee, Warsaw.

Switzerland

Commission nationale suisse de l'Unesco, Department politique federal, Berne.

Syria

Commission culturelle Nationale syreienne, Ministere de l'Instruction publique, Damas.

Turkey

Turkish National Commission for Unesco, Unesco Bureau Ministry of National Education, Milli Eqitim Bakanligi, Ankara.

Union of South Africa

South Africa National Commission for Unesco, Union Department of Education, New Standard Bank Building, Pretoria.

The United Kingdom

United States National Commission for Unesco, Department of State, Washington, D.C.

Uruguay

Commission nationale pur l'Education, La Science et la Culture (UNESCO), Ministere des Relations exterieures, Montevideo.

Venezuela

Commission nationale de l'Unesco, Ministere des Relations exterieures, Direction d'Organismes internationauz, Caracas.

APPENDIX—C

EDUCATION COMMITTEES OF THE WORLD FEDERATION OF UNITED NATIONS ASSOCIATIONS

Argentina
Association Argentina pro Naciones Unidas, 435 Calle Cordoba, Buenos Aires.

Australia
United Nations Association, 177 Collins Street, Melbourne.

Austria
Osterreichische Liga fur die Vereinten Nationen, 9 Bosendorferstrasse, Vienna I.

Belgium
Association belge pour la Cooperation des Nations Unies, Palais d'Egmont, Brussels.

Canada
United Nations Association, 163 Laurier Avenue west, Ottawa.

Cuba
Association Cubana de las Naciones Unidas, Tejadillo 54, La Hababa.

Czechoslovakia
U.N.A., Valentinska 1, Prague I.

Denmark
Forenede Nationers Forening, St. Kongensgade 60, Copenhagen.

France
Association francaise pour les Nations Unies, 2 rue de l'Elysee, Paris.

Greece
U.N.A., rue Asklipiou 20, Athens.

Hungary
Egyesult Nemzetsk Tarsasaga (Magyarerszag), Klotild-Utca 12/6, Budapest 5.

Italy
Istituto Nazionale per le Relazione Culturali con l'Estero, Piazza Firenze 27, Rome.

Lebanon
Association pour les Nations Unies, C/o M. Alfred Tabet, Cour d' Appel, Beyrouth.

Mexico
Association Mexicana pro is O.N.U. Calle de Merida 118, Colonia Roma, Mexico D.F.

The Netherlands
U.N.A., Riviervischmarkt 3a, The Hague.

New Zealand
United Nations Association, Nathan's Buildings, Grey Street, Wellington, C.I.

Norway
Norsk Samband for de Forente Nasjoner, Nobelinstituttet, Drammensveien 19, Oslo.

Sweden
Foreningen Mellanfolkligt Samarbete, Lilla Nygatan 4, Stockholm.

Switzerland
U.N.A., Faubourg du Lac 11, Neuchatel.

Togoland
Akpini Youth Society, Kpandu, British Togoland, Gold Coast, West Africa.

Turkey
Association turque pour les Nations Unies, Cocuk Esirgeme Apartmani Yenisehir Ankara.

The United Kingdom
Council for Education in World Citizenship, 11 Maiden Lane, London W.C. 2.

Union of South Africa
C/o Dr. Samuel Fielding, P.O. Box 465, Johannesburg.

The United States of America
United Nations Association, 45 East 65th Street, New York 21, N.Y.

Yogoslavia
U.N.A., Narodna Skupstina, Belgrade.

APPENDIX—D

UNITED NATIONS INFORMATION CENTRES

Brazil

Nacoes Unidas Centro de Informacoes do Rio de Janeiro, 11 Rua Mexico, Sala 1401 B, Rio de Janeiro.

China

United Nations Information Centre, 106 Whangpoo Road, Shanghai.

Czechoslovakia

United Nations Information Centre, Panska 5, Prague 2.

Denmark

United Nations Information Centre, 37 Vestre Boulevard, Copenhagen K.

France

Centre d'Information des Nations Unies, 19 avenue Kleber, Paris, XVI.

India

United Nations Information Centre, Theatre Communications Building, Connaught Place, Queensway, New Delhi 1.

Mexico

Centro de Informaciones delas Naciones Unidas, Edificio Internacional, Paseo Reforma No. I—Of. 405, Xexico, D.F.

Poland

United Nations Information Centre, Hoza 35, Warsaw.

Switzerland

United Nations Information Centre, Palais des Nations, Geneva.

The United Kingdom

United Nations Information Centre, Russell Square House, Russell Square, London, W.C.I.

The United States of America

United Nations Information Centre, 1712 H. Street, N.W., Washington, D.C.

The Union of Socialist Soviet Republics

United Nations Information Centre, Hohlovski Pereulok 15, Appt. 36, Moscow.

पारिभाषिक शब्दावली

अध्ययन दल	Study Group
अन्तर्राष्ट्रीय	International
अन्तर्राष्ट्रीय डाक संघ	International Postal Union
,, न्यायालय	International Court of Justice
,, बाल आपात कालिक कोष	International Children Emergency Fund
,, श्रम संगठन	International Labour Organisation
अपेक्षाकृत	Comparatively
अभिकरण	Agency
आदर्श योजना	Model Plan
आधारभूत	Fundamental
उन्नति	Advancement
एकता	Solidarity
कतरनें	Clipping
कल्पना	Concept
कार्यकलाप	Activity
किशोर	Adolescent
केन्द्र	Centre
ग्रंथ-सूची	Bibliography
गवेषणा	Research
गैर-सरकारी	Non-Governmental
गोष्ठी	Seminar

घोषणापत्र	Charter
जीवनी	Biography
झाँकी	Pageant
दृष्टिकोण	Attitude
दीर्घकालीन	Long-term
न्यासी परिषद्	Trusteeship Council
नागरिक	Citizen, Civic
नागरिक कर्तव्य	Civic Duty
,, शिक्षा	,, Education
,, शास्त्र	Civics
निर्देश	Directive
परिशिष्ट	Appendix
पहलू	Aspect
प्रदर्शित वस्तुएँ	Exibits
प्रकाशन	Publication
प्रत्यक्ष शिक्षा	Direct Teaching
प्रयोजन	Purpose
परस्परावलम्बी	Inter-dependent
पाठ्यक्रम	Curriculum
पाठ्य-पुस्तक	Text Book
प्रायोजना	Project
पीढ़ी	Generation
पुस्तिका	Pamphlet
प्रौढ़	Adult
बुनियादी शिक्षा	Basic Education
महत्व	Significance
मार्ग	Approach
मानव अधिकार	Human Rights
मानव जाति	Mankind
मुख्य कार्यालय	Head Quarters
यात्रा	Trip
योगदान	Contribution

राष्ट्र संघ	League of Nations
व्यवस्था	System
विकास	Development
वितरण	Distribution
विविधता	Diversity
विषयवस्तु	Content
विश्व-व्यापी	World-wide
विश्व-शान्ति	World peace
विश्लेषण	Analysis
स्वैच्छिक संस्थाएँ	Voluntary Institutions
संगठन	Organisation
संगीत गोष्ठी	Concert
संयुक्त राष्ट्र संघ	United Nations Organisation
संयुक्त राष्ट्र संघ—शैक्षिक, वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक संगठन	UNESCO
सद्भाव	Understanding
सदस्य-देश	Member State
संचार साधन	Means of Communication
संदर्भ ग्रंथ	Reference Books
संस्था	Institution
सम्मेलन	Session
समर्थन	Support
सर्वसम्मत	Unanimous
सहयोग	Collaboration, Co-operation
सामयिक	Contemporary
सामूहिक कार्य-कलाप	Group Activities
सार्वजनिक पुस्तकालय	Public Library
,, शिक्षा	Public Education
सिद्धान्त	Principle
सुरक्षा	Security
सेवा शिविर	Service Camp
शिक्षा मंत्रालय	Education Ministry
श्रव्य-दृश्य	Audio-Visual